44 लाख साल पुराने विशाल मवेशी के मिले जीवाश्म, उठेगा रहस्यों से पर्दा

मैड्रिड

स्पेन के गिरोना क्षेत्र के पास स्थित कैंप डेल्स निनोट्स पुरातात्विक स्थल पर वैज्ञानिकों को 44 लाख वर्ष पुराने एक विशालकाय मवेशी प्रजाति के जीवाश्म मिले हैं। शोधकर्ताओं के अनुसार, यह जीव आज के मवेशियों के शुरुआती पूर्वजों में से एक हो सकता है। इस खोज ने प्राचीन जीव-जगत और आधुनिक गाय-भैंस के विकासक्रम को समझने की दिशा में नई उम्मीदें जगाई हैं। इस खोज में सबसे खास बात यह है कि वैज्ञानिकों को एक या दो नहीं, बल्कि इस प्रजाति के 14 कंकाल एक साथ प्राप्त हुए हैं। स्पेन के गिरोना क्षेत्र के पास स्थित कैंप डेल्स निनोट्स पुरातात्विक स्थल पर हुई है। शोधकर्ताओं के अनुसार, मिले हुए कंकाल अत्यंत सुरक्षित अवस्था में हैं और अधिकांश वयस्क तथा वृद्ध जीवों के हैं। इससे वैज्ञानिकों को उनकी शारीरिक संरचना, जीवनशैली और विकासक्रम का विस्तृत अध्ययन करने का अवसर मिला है। इस प्राचीन जीव को वैज्ञानिकों ने पैराबोस टिनेरेसी नाम दिया है। अनुमान है कि इसका वजन लगभग 500 किलोग्राम था। हालांकि यह आधुनिक घरेलू गायों से कुछ हल्का था, लेकिन अपने शुरुआती मवेशी पूर्वजों की तुलना में इसका आकार काफी बड़ा माना जाता है। लगभग दो करोड़ वर्ष पहले के मवेशी आकार में छोटे और हिरण जैसे दिखाई देते थे, जबकि पैराबोस टिनेरेसी अधिक विकसित और भारी शरीर वाला जीव था। शोधकर्ताओं के अनुसार, इन जीवाश्मों का संरक्षण असाधारण रूप से अच्छा है। माना जाता है कि लाखों वर्ष पहले यह क्षेत्र एक झील का हिस्सा था, जहां आक्सीजन की मात्रा बहुत कम थी। इसी कारण बैक्टीरिया और अन्य अपघटक जीव कंकालों को नष्ट नहीं कर पाए। परिणामस्वरूप अधिकांश कंकाल लगभग पूर्ण अवस्था में संरक्षित रह गए। हालांकि भूगर्भीय दबाव के कारण कुछ खोपड़ियों का आकार थोड़ा विकृत हो गया है, फिर भी वैज्ञानिकों को अध्ययन के लिए पर्याप्त और महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई है। हड्डियों और दांतों के विश्लेषण से पता चला है कि यह प्रजाति दलदली और नम क्षेत्रों में रहने के लिए अनुकूलित थी। इनके पैर नरम जमीन पर चलने के लिए उपयुक्त थे और इनके दांत यह संकेत देते हैं कि ये कठोर घास के बजाय पेड़ों की पत्तियां और कोमल वनस्पतियां खाते थे। जीवाश्मों में नर और मादा दोनों के अवशेष मिले हैं, जिनमें आकार और सींगों की संरचना में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

वैज्ञानिकों के अनुसार, जब यह प्रजाति अस्तित्व में थी, तब यूरोप का मौसम आज की तुलना में अधिक गर्म और नम था। स्पेन का यह इलाका घने उपोष्णकटिबंधीय जंगलों और विशाल झीलों से घिरा हुआ था। उस समय यहां तापिर, गैंडे, मास्टोडोन, प्रारंभिक हिरण और कई अन्य बड़े स्तनधारी जीव भी निवास करते थे। वहीं मेगनटेरियन जैसे नुकीले दांतों वाले शिकारी भी इस पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा थे। इस अध्ययन ने मवेशियों के विकास से जुड़े कई पुराने वैज्ञानिक विवादों को सुलझाने में मदद की है। शोधकर्ताओं ने पैराबोस और अलेफिस नामक दो पुराने जीनस का पुनर्वर्गीकरण करते हुए पांच अलग-अलग प्रजातियों की पहचान की है।

न्यूज ब्रीफ

वर्ष 1882 में अमेरिकी इंजीनियर ने किया था इलेक्ट्रिक फैन का अविष्कार

लंदन। आधुनिक बिजली के पंखे का आविष्कार वर्ष 1882 में अमेरिकी युवा इंजीनियर शूइलर स्काट्स व्हीलर ने किया। उस समय उनकी उम्र मात्र 22 वर्ष थी। उन्होंने सिलाई मशीन की मोटर में दो ब्लेड लगाकर दुनिया का पहला इलेक्ट्रिक टेबल फैन तैयार किया। यह पंखा आकार में छोटा था और उसमें सुरक्षा जाली भी नहीं होती थी। इसके बाद सिंगर सिलाई मशीन कंपनी से जुड़े फिलिप डील ने इस तकनीक को आगे बढ़ाया। उन्होंने मोटर और ब्लेड को इस प्रकार डिजाइन किया कि पंखे को छत से लटकाया जा सके। इसी प्रयोग से आधुनिक सीलिंग फैन का जन्म हुआ। वर्ष 1887 में उन्होंने इसका पेटेंट भी हासिल किया। शुरुआती इलेक्ट्रिक पंखे पीतल के ब्लेड और कच्चे लोहे की मोटर से बनाए जाते थे। उनमें गति नियंत्रित करने की कोई व्यवस्था नहीं थी और बिजली का कनेक्शन सीधे बल्ब के साकेट से लिया जाता था। उस समय एक पंखे की कीमत लगभग 15 डालर थी, जबकि एक सामान्य अमेरिकी मजदूर की साप्ताहिक आय केवल 5 से 7 डालर के बीच होती थी। बिजली भी उस दौर में बेहद सीमित और महंगी सुविधा थी, इसलिए पंखों का उपयोग केवल संपन्न वर्ग तक सीमित रहा। भारत में बिजली के पंखों का आगमन ब्रिटिश शासन के साथ हुआ। जैसे-जैसे कोलकाता, मुंबई और दिल्ली जैसे शहरों में बिजली पहुंची, अंग्रेज अधिकारियों और धनी भारतीयों ने विदेशों से पंखे मंगवाने शुरू किए। शुरुआती दौर में ये पंखे केवल राजमहलों, बड़े होटलों, अदालतों और सरकारी दफ्तरों में दिखाई देते थे। फर्स्ट क्लास रेल डिब्बों और बड़े अस्पतालों में भी धीरे-धीरे पंखों का उपयोग शुरू हुआ। बिजली के पंखों के प्रसार ने पंखाबरदारों के सदियों पुराने पेशे को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया।

ईरान को दोहरा झटकाः चीन ने घटाई तेल खरीद, अमेरिकी नाकाबंदी का गहरा असर

तेहरान। अमेरिकी प्रतिबंधों के बावजूद, ईरान की अर्थव्यवस्था लंबे समय तक इसलिए मजबूत बनी रही क्योंकि चीन ने उससे बड़ी मात्रा में तेल खरीद रहा था। लेकिन अब ईरान के लिए हालात बदल गए हैं। चीन ने ईरानी तेल की खरीद काफी कम कर दी है, जिससे ईरान पर भारी आर्थिक दबाव आ गया है। घटती मांग और अमेरिका की बढ़ती सख्ती ने स्थिति को और गंभीर किया है। चीन की स्वतंत्र टीपाट रिफाइनरियां लगातार आर्थिक नुकसान झेल रही हैं, इसकारण उन्होंने ईरानी तेल की खरीद में कटौती की है और अपनी उत्पादन क्षमता भी घटाई है। वहीं, हाल के अमेरिकी प्रतिबंधों ने चीनी खरीदारों को ईरान के साथ व्यापार करने को लेकर सतर्क किया है। इसका सीधा असर यह हुआ है कि ईरान को अब अपने तेल की कीमतें कम करनी पड़ रही हैं, ताकि खरीदार आकर्षित हों। आंकड़ों के अनुसार, मई में ईरान से चीन को कच्चे तेल की आपूर्ति घटकर सिर्फ 1.6 लाख बैरल प्रतिदिन रह गई, जबकि फरवरी में यह 18 लाख बैरल प्रतिदिन थी। यह एक बड़ा झटका है।

लाटरी जीती तो बना करोड़पति फिर कानून आ गया आड़े

रोम। इटली में रहने वाले 36 वर्षीय नाइजीरियाई नागरिक इमेग्वे एहिजोम्वेंगी की कहानी इन दिनों चर्चा का विषय बनी हुई है। एक लाटरी टिकट ने उन्हें करोड़पति बना दिया, लेकिन कानूनी दस्तावेजों की कमी के कारण वह अपनी जीती हुई रकम तक नहीं पहुंच पा रहे थे। कई महीनों के संघर्ष के बाद अब उन्हें इटली का रेजिडेंस परमिट मिल गया है, जिसे वह लाटरी की रकम से भी अधिक मूल्यवान मानते हैं। इमेग्वे वर्ष 2016 में नाइजीरिया से इटली पहुंचे थे। उनका सफर बेहद कठिन रहा। लीबिया के रास्ते यूरोप पहुंचने के दौरान उन्हें दो वर्षों तक बंधक बनाकर रखा गया था और फिरौती के बाद रिहाई मिली थी। इटली पहुंचने के बाद भी उनके सामने रोजी-रोटी का संकट बना रहा। वह ट्यूरिन शहर में एक सुपरमार्केट के बाहर रुमाल बेचकर और कभी-कभी भीख मांगकर अपना गुजारा करते थे। पिछले वर्ष अक्टूबर में उन्होंने 5 यूरो का एक स्क्रैचकार्ड लाटरी टिकट खरीदा। किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि टिकट पर 5 लाख यूरो यानी लगभग 5.5 करोड़ रुपये का जैकपाट निकल आया। हालांकि इस जीत के बाद उनकी परेशानियां खत्म नहीं हुईं। इटली के नियमों के अनुसार बिना वैध रेजिडेंस परमिट के बैंक खाता नहीं खोला जा सकता था और बैंक खाते के बिना लाटरी की राशि प्राप्त करना संभव नहीं था। स्थिति और जटिल तब हो गई जब नागरिकता और कानूनी दर्जे से जुड़े मामलों में आर्थिक आत्मनिर्भरता साबित करने की आवश्यकता सामने आई।

अमेरिका-ईरान नहीं सुलझा पाए गांठ, पाकिस्तान को 24 घंटे में किसी चमत्कार की आस, होने वाले समझौते का मशहद में विरोध

वाशिंगटन/तेहरान

अमेरिका और तेहरान के बीच शांति समझौता बेहद नाजुक मोड पर अटक गया है। तमाम दावों के बावजूद ईरान इस पर हस्ताक्षर करने को तैयार नहीं। अलबत्ता सिर्फ पाकिस्तान जैसे मध्यस्थ को जरूर लग रहा है कि 24 के भीतर दोनों देश किसी अच्छे नतीजे पर पहुंच जाएंगे और होर्मुज जलडमरूमध्य फिर पुरानी स्थिति में लौट आएगा। ईरान का सैन्य नेतृत्व ठीक इससे उलट दावा कर रहा है। होने वाले शांति समझौते का ईरान में लोग विरोध कर रहे हैं। मशहद शहर की सड़कों पर प्रदर्शनकारियों ने गदर काट रखा है।

गल्फ न्यूज, शिन्हुआ, अल जजीरा और सीबीएस न्यूज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान के उत्तर-पूर्वी शहर मशहद में शनिवार को विदेश मंत्रालय के दफ्तर के बाहर दर्जनों लोगों ने विरोध-प्रदर्शन किया। उन्होंने शीर्ष राजनयिक अब्बास अरागची के खिलाफ नारे लगाए। एक वीडियो में इन महिलाओं को काले चादर (बुर्के) पहने विदेश मंत्रालय की इमारत के सामने लाल और काले झंडे लहराते व बेइज्जत अरागची, घुसपैठिए की मौत हो के नारे लगाते देखा गया। ईरान के कट्टरपंथी नेता भी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और मध्यस्थ पाकिस्तान के संयुक्त रूप से प्रचारित शांति समझौते का विरोध करना शुरू कर दिया है।

ईरानी कट्टरपंथी नेताओं का तक तर्क है कि यह समझौता देश के हितों के अनुरूप नहीं है। इससे तेहरान की होर्मुज जलडमरूमध्य पर पकड़ ढीली पड़ जाएगी। होर्मुज जलडमरूमध्य में हालिया झड़पों के बाद प्रचारित शांति प्रस्ताव से युद्धरत पक्षों और उनके मध्यस्थों की उम्मीदें बढ़ा दी हैं। ट्रंप ने शनिवार को ट्रुथ सोशल पर कहा, समझौते पर कल हस्ताक्षर होने हैं और हस्ताक्षर होते ही होर्मुज जलडमरूमध्य सभी के लिए खुल जाएगा। हालांकि इससे कुछ समय पहले ईरान के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता इस्माइल बकाई ने कहा था कि समझौते पर हस्ताक्षर की तारीख अभी तय नहीं हुई है। उन्होंने यह जोर देकर कहा था कि लेकिन यह कल (रविवार) नहीं होगा। बकाई ने माना कि आने वाले दिनों में ऐसा होने की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता।

अमेरिका-ईरान के बीच मुख्य मध्यस्थ पाकिस्तान के नेता ने भी कहा कि समझौता पहले से कहीं ज्यादा करीब है। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ ने कहा, अगले 24 घंटों में इसके अंतिम रूप लेने की उम्मीद है और पाकिस्तान इसके तुरंत बाद शांति समझौते पर इलेक्ट्रानिक हस्ताक्षर की तैयारी कर रहा है, जिसके बाद अगले हफ्ते तकनीकी स्तर की बातचीत शुरू हो सके। पाकिस्तान के विदेश मंत्रालय ने तो यहां तक कहा कि हस्ताक्षर रविवार को होने हैं।

तेहरान ने कहा है कि फिलहाल वह होर्मुज जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण बनाए रखेगा। गौरतलब है कि ईरान ने यहां पर टोल वसूलने के लिए एक नई संस्था बनाई है। इसके जवाब में ही अमेरिका ने सभी ईरानी बंदरगाहों की नाकाबंदी की है। शांति समझौते के घटनाक्रम से पहले शनिवार तड़के अमेरिकी मध्य कमान (सेंटकाम) ने कहा, ईरान ने जलडमरूमध्य से गुजरने वाले व्यावसायिक जहाजों पर कई वन-वे अटैक ड्रोन लान्च किए गए। इन सभी को अमेरिकी सेना ने मार गिराया है।

ईरान के विदेशमंत्री अब्बास अरागची शुक्रवार को सरकारी टेलीविजन को दिए साक्षात्कार में इस प्रस्तावित समझौते का जिक्र कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि इस समझौते के तहत अमेरिकी नौसैनिक नाकाबंदी हटेगी मगर हमारे लिए होर्मुज जलडमरूमध्य का प्रबंधन पहले जैसा नहीं रहेगा। ट्रंप इस शांति समझौते से काफी आशान्वित हैं। वह शनिवार को ट्रुथ सोशल पर कह चुके हैं कि अमेरिका ईरान को परमाणु शक्ति नहीं बनने देगा। उन्होंने कहा, जब सब कुछ शांत हो जाएगा, तो हम अंदर जाएंगे और परमाणु सामग्री को निकालेंगे और उसे नष्ट कर देंगे।

इस बीच एक पब्लिक मैरीटाइम रेडियो चैनल की आडियो रिकार्डिंग से होर्मुज में खतरे की लहरें उठने लगी हैं। इसमें इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कार्प्स (आईआरजीसी) की नौसेना के हवाले से जहाजों को इस जलमार्ग से गुजरने पर चेतावनी दी गई है। इस चेतावनी में अरब की खाड़ी और ओमान की खाड़ी में चल रहे सभी जहाजों को संबोधित करते हुए कहा कि होर्मुज को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है। कोई इसमें न प्रवेश करे।

आईआरजीसी ने इस बात से इनकार किया है कि रविवार को अमेरिका के साथ किसी समझौते पर दस्तखत होंगे। कार्प्स ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बातों का खंडन किया। आईआरजीसी ने टेलीग्राम पर जारी बयान में कहा कि प्रस्तावित समझौते की तारीख का संबंध 14 जून को ट्रंप के जन्मदिन से हो सकता है, इसलिए ऐसा होगा। इस पल को किसी कूटनीतिक उपलब्धि के बजाय पब्लिसिटी पाने वाला पल नहीं बनने दिया जाएगा।

डेनेरेस के अंत से बिल्कुल खुश नहीं थी एमिलिया, किया दर्द बयां

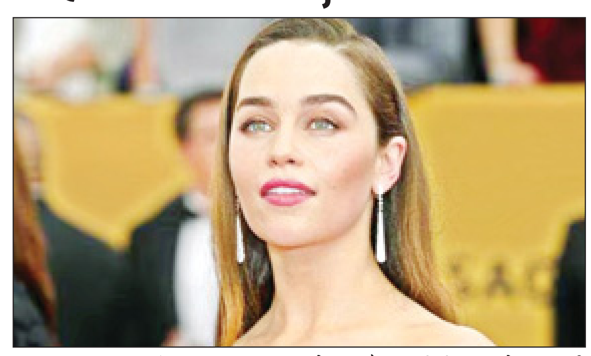

लास एंजेलस

ब्रिटिश अभिनेत्री एमिलिया क्लार्क ने फैंटेसी सीरीज गेम आफ थ्रोन्स में अपने अद्भुत अभिनय से डेनेरेस तारगारयेन के किरदार को जीवंत किया था। लेकिन डेनेरेस के साथ सीरीज के आखिरी सीजन में जो हुआ, उसने सिर्फ लाखों दर्शकों को ही नहीं, बल्कि खुद एमिलिया क्लार्क को भी गहरा सदमा दिया था। अब सालों बाद अभिनेत्री ने उस पल को याद करते हुए खुलासा किया है कि जब उन्हें अपने प्रिय किरदार के दर्दनाक अंत के बारे में पता चला तो उन्हें अंदर तक झकझोर दिया था। एमिलिया क्लार्क ने बताया कि डेनेरेस तारगारयेन का अंत जिस तरह से दिखाया गया, वह उससे बिल्कुल भी खुश नहीं थीं। सीरीज में डेनेरेस को मदर आफ ड्रैगन्स और एक शक्तिशाली रानी के रूप में दिखाया गया था, और यह किरदार पूरी दुनिया में बेहद लोकप्रिय हुआ था। एमिलिया ने साल 2011 से 2019 तक इस भूमिका को निभाया और इस किरदार ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक बड़ी पहचान दिलाई। सीरीज के आखिरी एपिसोड में डेनेरेस की मौत दिखाए जाने का फैसला लंबे समय तक चर्चा और विवादों का विषय रहा था, जिससे कई प्रशंसक भी निराश हुए थे। कहानी के अनुसार, जान स्नो, जिसका किरदार किट हैरिंगटन ने निभाया था, राज्य और दुनिया को बचाने के लिए डेनेरेस की हत्या कर देता है। एमिलिया ने अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा, इस कहानी के मोड़ ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया था। डेनेरेस के आखिरी शब्द जान स्नो के लिए थे, वे दोनों मिलकर दुनिया को एक बेहतर जगह बनाने की बातें कर रहे थे, लेकिन अगले ही पल जान स्नो उसे मार देता है। अभिनेत्री ने इस पूरे घटनाक्रम पर अपनी गहरी नाराजगी और आश्चर्य भी जाहिर किया। उन्होंने कहा, मुझे यह बेहद अजीब लगा था। डेनेरेस ने जान स्नो के लिए सब कुछ किया, यहां तक कि उसके लिए शहरों को भी तबाह कर दिया, लेकिन आखिर में उसी ने उसे मार दिया। उस समय मैं इस फैसले से बेहद नाराज थी। मेरे लिए अपने किरदार के इस अचानक और दुखद अंत को स्वीकार करना आसान नहीं था। एमिलिया ने उस पल को याद करते हुए बताया, जब मैंने पहली बार आखिरी सीजन की स्क्रिप्ट पढ़ी थी, तब मैं छुट्टियों से वापस लौटी थी। फोन आन करते ही मुझे स्क्रिप्ट मिली और मैं उसे तुरंत पढ़ने बैठ गई। पूरी कहानी पढ़ने के बाद मैं इतनी हैरान रह गई कि कुछ समय तक समझ ही नहीं पाई कि आगे क्या करना है। मैं घर से बाहर निकल गई और कई घंटों तक अकेले घूमती रही। उस दौरान मैं अपनी चाबियां, फोन और कई जरूरी चीजें तक भूल गई थी, क्योंकि मेरा ध्यान पूरी तरह कहानी और डेनेरेस के अंत पर केंद्रित था।

पाकिस्तान ने बजट में जनता को नहीं दी राहत

इस्लामाबाद। डूबती अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए चीन को गधों का मांस और खाल बेचने की प्लानिंग करने वाले पाकिस्तान ने अपने बजट में जनता को राहत देने के बजाय सेना की झोली भर दी है। शहबाज सरकार ने साल 2026-27 के लिए पाकिस्तान के रक्षा बजट में करीब 18 फीसदी की भारी-भरकम बढ़ोतरी करते हुए इसे 3 लाख करोड़ रुपए कर दिए हैं। इस फैसले ने पहले ही जल रहे पाकिस्तान की आग में घी डालने का काम किया है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक पीओके और बलूचिस्तान में पहले से ही जारी बगावत की आग अब राजधानी इस्लामाबाद की सड़कों तक पहुंच गई है, जहां महंगाई की मार झेल रही जनता का गुस्सा सरकार के खिलाफ हिंसक रूप में फूट पड़ा है। जनता सवाल पूछ रही है कि जिस देश की आवाम जरुरी चीजों के लिए तरस रही है, वहां की सरकार की प्राथमिकताएं हथियार कैसे हो सकते हैं पाकिस्तान सरकार ने जो आर्थिक सर्वेक्षण 2025-26 पेश किया है, उसमें उन्होंने अपनी गिरती अर्थव्यवस्था को संभालने के लिए बकायदा गधों के मांस और खाल के निर्यात को एक बड़ा जरिया बताया है। रिपोर्ट के मुताबिक पाकिस्तान में गधों की आबादी बढ़कर 62 लाख हो चुकी है और अब वे चीन को गधे बेचने की तैयारी कर रहे हैं। नेशनल असेंबली में वित्त मंत्री मोहम्मद औरंगजेब ने सेना को खुश करने के लिए बजट का एक बहुत बड़ा हिस्सा डिफेंस के नाम कर दिया है।

फ्रांस पहुंचे प्रधानमंत्री मोदी, नीस में हुआ भव्य स्वागत

भारत इनोवेट्स से वीवा टेक तक, फ्रांस दौरे में नवाचार पर जोर देंगे मोदी

नीस (फ्रांस)

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों के निमंत्रण पर आधिकारिक यात्रा के तहत शनिवार को फ्रांस के नीस शहर पहुंचे हैं। इस यात्रा को भारत और फ्रांस के बीच रणनीतिक, आर्थिक, तकनीकी और नवाचार सहयोग को नई दिशा देने की दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

नीस पहुंचने के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा कि उनकी यह यात्रा केवल नीस तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसमें एवियां और पेरिस में भी विभिन्न कार्यक्रम शामिल हैं। उन्होंने कहा कि यात्रा के दौरान द्विपक्षीय और बहुपक्षीय बैठकों के माध्यम से भारत अपने प्रमुख विकास साझेदारों के साथ मित्रता और सहयोग को और मजबूत करेगा।

फ्रांस पहुंचने पर भारतीय समुदाय के लोगों ने भी प्रधानमंत्री मोदी का गर्मजोशी से स्वागत किया। एयरपोर्ट और होटल के बाहर बड़ी संख्या में मौजूद प्रवासी भारतीयों से मिले स्नेह से अभिभूत प्रधानमंत्री ने कहा कि मातृभूमि से हजारों किलोमीटर दूर रहने के बावजूद भारतीय समुदाय का देश के साथ भावनात्मक जुड़ाव हमेशा मजबूत बना रहता है।

प्रधानमंत्री मोदी 14 जून को राष्ट्रपति मैक्रों के साथ द्विपक्षीय वार्ता करेंगे। दोनों नेता भारत-फ्रांस संबंधों के विभिन्न आयामों की समीक्षा करेंगे और सहयोग के नए क्षेत्रों पर चर्चा करेंगे। इसी दौरान दोनों नेता संयुक्त रूप से भारत इनोवेट्स कार्यक्रम का उद्घाटन भी करेंगे, जिसमें भारत, फ्रांस और अन्य देशों के प्रमुख स्टार्टअप तथा वेंचर कैपिटल संस्थान भाग लेंगे।

भारत-फ्रांस नवाचार वर्ष के अंतर्गत आयोजित यह कार्यक्रम दोनों देशों के बीच नवाचार और प्रौद्योगिकी सहयोग को नई ऊर्जा देने वाला माना जा रहा है। विदेश मंत्रालय के अनुसार, यह पहल दोनों देशों के बीच उभरते तकनीकी और उद्यमशीलता पारिस्थितिकी तंत्र को जोड़ने का महत्वपूर्ण मंच बनेगी।

फ्रांस प्रवास के दौरान प्रधानमंत्री मोदी 16-17 जून को एवियां में आयोजित जी-7 सम्मेलन में भी हिस्सा लेंगे। भारत की भागीदारी को वैश्विक दक्षिण की मजबूत आवाज और वैश्विक चुनौतियों के समाधान में एक महत्वपूर्ण साझेदार के रूप में देखा जा रहा है।

इसके बाद 18 जून को प्रधानमंत्री मोदी पेरिस में राष्ट्रपति मैक्रों के साथ यूरोप के सबसे बड़े प्रौद्योगिकी और स्टार्टअप आयोजन विवा-टेक में शामिल होंगे। इस वर्ष सम्मेलन में भारत का मंडप सबसे बड़ा होगा, जो वैश्विक नवाचार, डिजिटल परिवर्तन और स्टार्टअप क्षेत्र में भारत की बढ़ती भूमिका को प्रदर्शित करेगा।

पाकिस्तान में पानी को लेकर हाहाकार, अरबों के चावल उद्योग पर संकट

सिंधु जल समझौता रद्द होने का दिख रहा असर

कराची

पाकिस्तान इस समय एक बेहद गंभीर और ऐतिहासिक जल संकट के मुहाने पर खड़ा हो गया है। देश के सिंध और बलूचिस्तान प्रांतों में पानी की भारी किल्लत के कारण कृषि, आम जनजीवन और क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था पर बड़ा खतरा मंडराने लगा है। सिंचाई नेटवर्क पर बढ़ते दबाव और प्रांतों के बीच पानी के असमान बंटवारे को लेकर उपजे विवाद ने इस पूरी स्थिति को और ज्यादा तनावपूर्ण बना दिया है। सिंचाई अधिकारियों ने उच्च अधिकारियों को पत्र लिखकर चेतावनी दी है कि पानी की इस भारी किल्लत के कारण लारकाना, शिकारपुर, कंबर-शहदादकोट और बलूचिस्तान के निचले इलाकों में मौसमी फसलों, विशेष रूप से चावल की खेती को भारी नुकसान पहुंच सकता है।

सुक्कुर बैराज कंट्रोल रूम से मिले आधिकारिक आंकड़ों के मुताबिक, सिंध प्रांत को मिलने वाले पानी में इस समय 39.6 प्रतिशत की भारी कमी दर्ज की गई है। वर्तमान में सुक्कुर बैराज पर पानी की कुल आवक 50,620 क्यूसेक है, जबकि वहां से निकासी केवल 32,120 क्यूसेक ही हो पा रही है। सिंध की सात मुख्य नहरों के लिए कुल 53,200 क्यूसेक पानी आवंटित है, लेकिन इस समय उन्हें उनके कोटे से 21,080 क्यूसेक कम पानी मिल रहा है। अलग-अलग नहरों की स्थिति का जायजा लें तो दादू नहर का सबसे बुरा हाल है, जहां निर्धारित 5,997 क्यूसेक के मुकाबले सिर्फ 860 क्यूसेक पानी मिल रहा है—यानी सीधे तौर पर 85.7 प्रतिशत की भारी कमी देखी जा रही है। इसके अलावा खैरपुर फीडर वेस्ट में 67.1 प्रतिशत, कोट्री बैराज में 55.74 प्रतिशत, उत्तर-पश्चिम नहर में 50.7 प्रतिशत और राइस नहर में 39.1 प्रतिशत पानी की किल्लत बनी हुई है। इस बीच, सिंध के सिंचाई विभाग और किसान संगठनों ने ऊपरी हिस्से में स्थित पंजाब प्रांत पर अपने निर्धारित कोटे 44,000 क्यूसेक के मुकाबले 53,394 क्यूसेक पानी लेने का आरोप लगाया है, जो उनके तय अधिकार से 21.35 प्रतिशत अधिक है।

फिर धान उत्पादन हो जाएगा खत्म – इस जल संकट का सबसे घातक असर पाकिस्तान के बासमती चावल उद्योग पर पड़ने की आशंका है। लारकाना चैंबर आफ कामर्स एंड इंडस्ट्री के अध्यक्ष खैर मोहम्मद शेख के अनुसार, यह संकट देश के सबसे प्रमुख कृषि क्षेत्रों में से एक को तबाह कर सकता है। अकेले लारकाना जिले में हर साल लगभग 2,42,000 मीट्रिक टन चावल का उत्पादन होता है और यह डिवीजन केवल चावल के निर्यात से देश को सालाना लगभग 90 अरब रुपये की विदेशी मुद्रा कमा कर देता है। इसके अलावा, सिंध की कुल 650 राइस मिलों में से लगभग 500 मिलें अकेले लारकाना क्षेत्र में ही स्थित हैं। पानी की अनुपलब्धता के कारण किसानों को खेतों को तैयार करने और बुवाई शुरू करने में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है, जिससे आने वाले महीनों में पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था को बड़ा झटका लगना तय माना जा रहा है।